Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

सिद्ध सम्प्रदाय के परिष्कृत रूप नाथपंथ से कबीर का सम्बन्ध एक विवेचना

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

सिद्ध सम्प्रदाय के परिष्कृत रूप नाथपंथ से कबीर का सम्बन्ध एक विवेचना

Km. Archana Aggarwal[1] Dr. Ishwar Singh[2]

[1]Research Scholar, CMJ University, Meghalaya

[2]Rtd. Associate Professor, Govt. P.G. College, Narnaul

----------♦----------

परिचय

कबीर की यह महानता ही है कि जहां उनको अच्छाई नजर आई वहां उसकी प्रसंशा की है और जहां उन्हें दोष नजर आए वहाँ उनकी खबर लेने से नहीं चूके ठीक इसी प्रकार यद्यपि वैष्णवों से कबीर प्रभावित रहे हैं क्योंकि उन्हीं के राम रसायन से वे आनन्दमत्त हैं, किन्तु उनके दोष दर्शन में भी उन्होंने पैर पीछे नहीं हटाया है :–

"बैस्नो भय तो क्या भया, बूझा नहीं विवेक ।

छापा तिलक बनाइ कर, दग्ध्या लोक अनेक ।।"[1]

साहित्यिक परिचय

इस क्षेत्र में कबीर के कार्य पर प्रकाश डालते हुए एफ ई जी महोदय ने लिखा है कि कबीर का महत्त्वपूर्ण कार्य हिन्दू और इस्लाम दोनों धर्मों की कमियों की ओर संकेत करना था जो इनका एक महत्त्वपूर्ण कार्य रहा :–

कबीर ने मधुमक्षिका के समान समस्त धर्मों का सार लेकर तथा आत्मचिंतन कर जनता को ऐसा रूप दिखाया जो सर्वग्राह्य एवं सर्वसुखकारी था। धर्म के इस सर्वजन–सुलभ स्वरूप को प्रस्तुत करने में कबीर को पूर्व स्थापित धार्मिक विचार धाराओं के आडम्बरों का खण्डन करना पड़ा था । इस धार्मिक दोष दर्शन में भी कबीर पूर्ण निष्पक्ष रहे । उन्होंने हिन्दू–मुसलमान दोनों धर्मों के ठेकेदारों को बुरी तरह फटकारा है :–

"जो रे खुदाय मसीत बसतु है, अवर मुलुक किह केरा ।

हिन्दू मूरति नाम निवासी, दुहमति तत्तु न हेरा ।।"[2]

इस प्रकार से कबीर के युग में जो धर्म सम्बन्धी विचारधारा हिन्दूओं और मुसलमानों में थी वह नाना आडम्बरों को धारण किए हुए थी और मुसलमानों में धार्मिक वैमनस्थ फैल रहा था । जिसको देख कर कबीर ने इसे समाप्त कर साम्य स्थापित करना चाहा और ईश्वर प्रेम के द्वारा मानव का मानव के प्रति प्रेम जगा कर महान् कार्य किया जो आज भी सबके लिए आदर्श रूप है ।

साहित्य सामग्री व विधियां

सर्ववर्ग समनव्यवादी कबीर का पदार्पण जिस समय में हुआ था उस समय समाज एक कठिन समस्या (दूर्दशा) के दौर से गुजर रहा था । अनेक सम्प्रदाय बने हुए थे जो एक दूसरे से स्वयं को उच्चा दिखाने में लगे हुए थे और जब परस्पर वैमनस्य व विरोध की भावना हो तो प्रकृति के नियमानुसार मनुष्य में बाह्याडम्बर की प्रवृति उभर कर सामने आती है वह मिथ्याचार को अपना कर दूसरो से स्वयं को सर्वोत्तम दिखलाने की कोशिश करता है लेकिन फिर भी ऐसी बात नहीं है कि उनमें अच्छाइया (सत्) होती ही नहीं बल्कि वे अच्छाइयां (सत्) अहंकार वश पनपी बुराइयों, कुमार्ग (असत्) के बादलों से आच्छादित हो जाती हैं जिसे कोई महान् व्यति ही समझ सकता है ।

समानता के पूजारी कबीर ही वह महान् व्यक्ति हुए जिन्होंनें समाज को भलि प्रकार से समझा है । उन्होंने जहां भी बुराई देखी उसका खण्डन किया है । सम्प्रदायों के द्वारा समाज में जो प्रचार प्रसार हो रहा था भोली– भाली जनता का पथ भ्रष्ट किया जा रहा था उसका कबीर ने जमकर विरोध किया है । कबीर की दृष्टि सम्प्रदायों के विषय में भी समनव्यवादी रही है । उन्होंने प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय के असत् पक्ष का विरोध करके सत् पक्ष को आत्मसात् किया है और अपनी मौलिक मान्यताऐं स्थापित की यहाँ औदात्त्य विरल है :–

कबीर ने अपनी सार ग्रहिणी प्रतिभा व समनव्यवादी प्रकृति के कारण जिन–जिन सम्प्रदायों से 'सत्' को ग्रहण किया है वे इस प्रकार से हैं –

1 सिद्ध व नाथ सम्प्रदाय

बौद्ध धर्म की विकृत परम्परा में उद्भूत सिद्ध सम्प्रदाय का सैद्धान्तिक पक्ष (युगनद्ध की उपासना, रजकी तथा डोमनी आदि नारियों का सेवन, ब्रह्ममुख को सहवास सुख के समान मानना आदि)[3] कबीर को ये कभी मान्य न था। फिर भी सिद्धों से कबीर ने प्रभावित होकर उनकी अन्तर्मुखी साधना, रहस्यात्मक उल्टी बानियों, पारिभाषिक तथा प्रतीकात्मक शब्दावली को ग्रहण किया ।

सिद्ध सम्प्रदाय के परिष्कृत रूप नाथपंथ से कबीर का सम्बन्ध सिद्धों से भी अधिक देखने को मिलता है । नाथ पंथ से कबीर

www.ignited.in

ने उसकी हठयोग साधना तथा अनेक स्थलों पर मुद्रा सींगी, मेखला, कींगरी आदि का संकेत करते हुए जिस अवधू योगी की चर्चा करते हैं, वह नाथपंथी योगी ही प्रतीत होता है ।[4] कबीर की साधनापद्धति –षट्चक्रभेदन तथा कुण्डलिनी–उत्थान प्रक्रिया ब्रह्म का द्वैताद्वैत विलक्षण शब्द तथा ज्योति रूप, अनहद नाद, सुरति, निरति, शून्य, गगन, चन्द्र, सूर्य इत्यादि पारिभाषिक शब्द नाथ सम्प्रदाय से ही ग्राह्य सिद्ध होते हैं । उदाहरण –

"अवध जोगी जग थैं न्यारा ।

मुद्रा, निरति, सुरति करि स°गी, नाद न षडे धारा ।

ब्रह्म अगनि में काया जारै, त्रिकुटी संगम जागै ।

कहे कबीर सोई जोगेश्वर, सहज सुन्नि ल्यौ लागे ।"[5]

निष्कर्ष

कबीर ने समाज के निम्न वर्ग को जागृत करके उच्च वर्ग के स्म स्तर पर लाने की कोशिश की थी इन्होंने छूत–छात और जाति–पांति का विरोध करके एक्य तथा समानता का सन्देश दिया था । कबीर के काव्य में भेदभाव विहीनता, सर्वात्मवाद, निर्गुण भक्ति, कर्म और वैराग्य का समन्वय, अनन्य प्रेम भावना, नाम साधना, सेवक सेव्य भावना इत्यादि अनेक बातें सन्त नामदेव के ग्रहित प्रतीत होती हैं ।[6] सन्तों की परम्परा में रामानन्द से निर्गुनिये सन्त शिष्यों का नाम भी उल्लेखनीय है । उन्होंने निर्गुण निराकार, अलख निरंजन को अपना आराध्य और अनुसंधेय बनाया था । सिद्धों और नाथों की ही परम्परा में अद्भूत इन सन्तों ने समाज के निम्न वर्ग से सम्बन्द्ध होने के कारण उच्च वर्ग की तीव्र आलोचना करते हुए निम्नवर्गाद्वार का प्रयास किया था ।

प्रायः सभी सन्त अनपढ़ और अशिक्षित थे । परन्तु उनकी सधुक्कड़ी भाषा में भी प्रतीकात्मक और लाक्षणिक शब्दावली उत्कृष्ट कवि प्रतिभा का परिचय देती है । दर्शन शास्त्र और साहित्य का समन्वित रूप इन सन्त कवियों के काव्य में दृष्टिगत होता है । कबीर का काव्य सन्त सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का प्रतिनिधित्व करता है । उनकी निर्गुण साधना खण्डन मण्डन पद्वति, एकता एवं समानता की घोषणा, सधुक्कड़ी भाषा इत्यादि विशेषताऐं सन्त सम्प्रदाय से ग्राह्य है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

;कद्ध आधर–ग्रन्थ

1. पारस नाथ तिवारी, कबीर ग्रन्थवली, हिन्दी परिषद प्रयाग विश्वविद्यालय प्रयोग, प्रथम संस्करण, अक्टुबर 1961 ई॰ ।
2. पुस्पपाल सिंह, कबीर ग्रन्थावली, अशोक प्रकाशन, 2615, नई संड़क दिल्ली – 6, नवीन संस्करण – 2004 ।
3. भगवत् स्वरूप मिश्र, कबीर, ग्रन्थावली, रागेवराध्व मार्ग, आगरा – 2, चतुर्थ संस्करण, 1983 ई॰ ।
4. शान्तिस्वरूप गुप्त, सुरेश अग्रवाल, कबीर ग्रन्थावली, अशोक प्रकाशन 2615 नई सड़क, दिल्ली–6, नवीन संस्करण 2004 ।

;खद्ध सहायक–ग्रन्थ

5. अयोध्या सिंह उपाध्याय ;हरिऔध्द्ध, कबीर वचनावली, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, संस्करण ग्यारहवां ।
6. कमलेश वोहरा, छायावादी काव्य में उदात्त तत्त्व, नेशनल पब्लिशिंग हाउफस ।
7. कबीर और जायसी अग्रमा संस्कृति, प्रकाशन संस्थान 4715/21 दयानन्द मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली 110002 प्रथम संस्करण 1988 ।
8. गणपति चन्द्र गुप्त, साहित्यिक निबंध, संस्करण पन्द्रहवां ।
9. गोविंद त्रिागुणायत, कबीर की विचारधरा, द्वितीय संस्करण, 1960 ।
10. जगदीश पाण्डेय, उदात्त सि(ान्त और शिल्पन, अर्चना, आरा ;बिहारद्ध प्रथम संस्करण, 1974 ई॰ ।
11. देवराज, संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, प्रकाश ब्यूरो, सूचना–विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण, 1913 ई॰ ।
12. नगेन्द्र, काव्य में उदात्त तत्व, द्वितीय संस्करण, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1958 ई॰ ।
13. नगेन्द्र, काव्य बिम्ब, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, प्रथम संस्करण ।
14. नगेन्द्र, पाश्चात्य काव्य शास्त्रा की परम्परा, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1956 ई॰ ।
15. नजीर मुहम्मद, भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, प्रथम संस्करण, 1971 ।
16. निर्मला जैन ;अनु॰द्ध काव्य में उदात्त तत्व, प्रथम संस्करण ।
17. निर्मला जैन ;अनु॰द्ध उदात्त के विषय में, प्रथम संस्करण ।
18. तारकनाथ बाली, पाश्चात्य काव्य शास्त्राः सि(ान्त और वाद, मैकमिलन कम्पनी इण्डिया लि॰, 1974 ई॰ ।
19. प्रेम सागर, उदात्त भावनाः एक विश्लेषण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, प्रथम संस्करण, 1973 ई॰ ।

www.ignited.in

20. प्रताप सिंह चौहान, कबीर साध्ना और साहित्य प्रकाशक ग्रन्थम, रामबाग, कानपुर–20म॰12 संस्करण, 1976

21. परशुराम चतुर्वेदी, कबीर साहित्य की परख, भारती भंडार, लीडर प्रैस इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, 1978 ई॰

22. रघुवंश, कबीर एक नई दृष्टि, लोक भारती प्रकाशन–2थ।, महात्मा गांधि मार्ग, इलाहाबाद, 1985 ई॰ ।

23. भगीरथ मिश्र, कबीर बानी, कमल प्रकाशन, 433 गांधि मार्ग इन्दौर, प्रथम संस्करण, 1970 ई॰ ।